क्या ख़िलाफ़ते अलविया नाकामयाब रही?

मलाजुल उलमा मौलाना सै0 हसन नक़वी

मौलाए काएनात हज़रत अमीरुलमोमिनीन अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम की ख़िलाफ़त के बारे में कुछ नासमझ, अन्जान, तास्सुब से भरे, बातिल की राह पर चलने वाले, हक़ से दूर, सिराते मुस्तक़ीम से अलग और बातिल का झण्डा लहराए हुए, इसकी क़सम खाये हुए हैं कि हक़ चाहे कितना ही ज़ाहिर होगा ईमान कितना ही रौशन हो, हिदायत का चिराग़ कितना ही रौशन हो और हक़ तक ले जाने वाला रास्ता कितना ही सीधा और साफ़ हो, लेकिन हम हमेशा हक़ से कतरा कर चलेंगे हक़ के चिराग़ को बातिल की कमज़ोर फूँकों से बुझा देंगे हक़ के चाँद पर मिट्टी डाल देंगे। ख़ुदा की क़सम हक़ कभी मिटाने से नहीं मिट सकता, आफ़ताबे दो आलम पर बग़ैर ख़ुदा की मर्ज़ी के गहन नहीं पहुँच सकता, सिराजे मुनीर ख़ामोश नहीं हो सकता, हिदायत का चिराग़ बुझ नहीं सकता, बातिल की भरपूर ताक़तें मिट जाएंगी, हुकूमतें तबाह हो जाएंगी, इक़्तेदार फ़ना हो जाएंगे, दौलतें ख़त्म हो जाएंगी, फ़ौजों की ज़्यादती ख़त्म हो जाएगी, यहाँ तक कि बातिल की आख़िरी सांसें लम्बी ख़ामोशी से बदल जाएंगी। और मिटाने वाले ख़ुद मिट जाएंगे और मिट गए लेकिन इमामत का चाँद रौशन रहा और यह तो अल्लाह का वादा भी था, ''और अल्लाह अपने नूर को पूरा कर के रहेगा चाहे काफ़िर उसे नापसन्द करें'' वह जिसे चाहे रखे जिसे चाहे फ़ना कर दे! अली[अ०] की हक़्क़ानियत की यही दलील है कि बातिल फ़ना हो गया मगर हक़ हमेशा की तरह आज भी बाक़ी है और इन्शाअल्लाह क़यामत तक क़ायम रहेगा।

कुछ नासमझ और मुतास्सिब लोग यह कहते हैं कि अमीरुलमोमिनीन[अ०] की ख़िलाफ़त नाकामयाब रही और जिन इस्लामी हुक्मरानों को ख़लीफ़ा कहा जाता है उनकी ख़िलाफ़तों के दौर भी (ही) कामयाब गुज़रे, लेकिन इन नासमझ लोगों को चाहिए कि वह तारीख़ को तास्सुब से दूर होकर और हक़ की तलाश के इरादे से पढ़ें तो उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि हक़ीक़त में किसकी ख़िलाफ़त कामयाब गुज़री? अब मेरे इन बयानों को ग़ौर से देखिये।

अरब में हुकूमत का पुराना निज़ाम

अरब में इस्लाम का सूरज निकलने से पहले शख़्सी सलतनत और हुकूमत का रवाज था, इक़्तेदार परस्ती हद से आगे बढ़ी हुई थी और यह हालत हो गई थी कि हर क़ौम और हर क़बीला इससे मुतास्सिर हुए बिना न रह सका था, हर शख़्स अपने क़बीले का हुक्मरान था और आम तौर पर शख़्सी इक़्तेदार माना जाता था।

अरब में जमहूरी निज़ाम

जनाब रिसालतमॉब[स०] ने अल्लाह की हुकूमत को क़ुबूल करने की दावत दी मगर आपकी वफ़ात के बाद ख़िलाफ़त के नये मुदब्बिरों ने मुल्की निज़ाम की सूरत बदल डाली ख़िलाफ़ते उला के वक़्त जमहूर या इज्माअ़ जो कुछ हुआ उसकी थोड़ी बहुत हैअत ज़रूर क़ायम हुई, मगर ढाई बरस के बाद फिर जमहूरी निज़ाम बदल कर शख़्सी हुकूमतों की तरह से और इज्माअ़ तोड़ कर शख़्सी इख़्तियार की बिना पर दूसरे ख़लीफ़ा को ख़लीफ़-ए-अव्वल ने मुक़र्रर किया दूसरी ख़िलाफ़त या दूसरी हुकूमत ने छः ख़ास लोगों पर इज्माअ़ के इनएक़ाद को महदूद व मख़सूस कर दिया, दूसरी ख़िलाफ़त ने अपनी बेतवज्जोही की बिना पर राय शुमारी (वोटिंग) की तरफ़ ध्यान न किया बल्कि उनके ज़माने में मरवान इब्ने हेकम के शख़्सी इख़्तियारात ने अ़वाम के आम और अच्छे माहौल को इक़्तेदार की गन्दी हवा से ख़राब कर

दिया और उनके खुदग़रज़ मुल्की निज़ाम ने शख़्सी और जमहूरी दोनों सूरतों को बिगाड़ कर ग़लत बुनियादें अपनी ख़िलाफ़त में क़ायम की।

हज़रत अली[अ०] की हुकूमत के वक़्त मुल्क का हाल

बदअम्नी, पुरआशोबी और कैफ़ियत हंगामी का मुल्क पर पूरी क़ुव्वत से तसल्लुत था, इस्लामी मुल्कों में ग़दर मचा हुआ था कि अमीरुलमोमिनीन की ज़ाहिरी ख़िलाफ़त और तख़्तनशीनी वाक़े हुई। यह ग़दर आपकी तख़्त नशीनी की वजह से नहीं हुआ था बल्कि पाँच बरस पहले से मुमालिके महरूसा में मचा हुआ था इस ग़दर के ज़िम्मेदार अमीरुलमोमिनीन[अ०] नहीं थे, क्योंकि यह ग़दर हुकूमते सालिसा या ख़िलाफ़त सालिसा में मरवान के हाथों मुल्की निज़ाम के तबाह होने से हुआ था उनकी वज़ार के आख़ीर ज़माने में तो मुल्क के हर हर गोशे से आम तौर से ग़दर और फ़ितने व फ़साद की सदाएं आने लगी थीं, चारों तरफ़ से फ़ितने के तूफ़ान उठ रहे थे ख़िलाफ़त के तमाम मामले मरवान की नासमझी और नतीजे की फ़िक्र न होने की वजह से बर्बाद हो गए थे, आपकी ख़िलाफ़त के ज़ाहिरी ज़माने में ख़िलाफ़त के कई चाहने वाले थे, तलहा अगर कूफ़ा चाहते थे तो ज़ुबैर बसरा, अब्दुल्लाह इब्ने अबी सर्ज को मिस्र की तलाश थी तो मुआविया इब्ने अबी सुफ़यान को मुल्के शाम की फ़िक्र थी अगर उस ज़माने के पुरआशोब ज़माने पर ग़ौर किया जाए तो मालूम हो जाएगा कि जनाब अमीरुलमोमिनीन[अ०] की कुल चार साला ज़ाहिरी ख़िलाफ़त का ज़माना सिर्फ़ इस फ़ितने और फ़साद के ख़त्म करने के लिए काफ़ी नहीं था।

जनाब अमीरुलमोमिनीन[अ०] ने ज़ाहिरी ख़िलाफ़त क्योंकर क़ुबूल की

जब इस्लाम का तीसरा शख़्सी दौर ख़त्म हुआ तो अब फिर लोगों के दिलों में आज़ादी और हुर्रियत की चिंगारी जलने लगी और तमाम अहले शूरा ने इत्तफ़ाक़ किया कि, अब इस्लाम में हज़रत अली[अ०] के सिवा कोई ख़िलाफ़त का मुस्तहक़ नहीं लिहाज़ा लोगों ने आपको मजबूर करना शुरु किया और आपने इनकार पर इनकार किये यहाँ तक कि लोग आपके क़त्ल पर आमादा हो गए और ऐसी भेड़या धसां हुई कि जिसकी तस्वीरकशी ख़ुद आप ने अपने मशहूर ख़ुतबे ख़ुतब-ए-शक़शक़िया में की है, फ़रमाते हैंः

"मुझे छोड़ दो, और (इस ख़िलाफ़त के लिए) मेरे अलावा कोई और ढूँढ लो। हमारे सामने एक ऐसा मामला है जिसके कई रुख़ और कई रंग हैं। जिसे न दिल बर्दाश्त कर सकते और न अक़्लें मान सकती हैं।" (ख़ुतबा न०-9)

इन फ़िक़्रों से मालूम होता है कि हज़रत ज़माने की नासाज़गारी और माहौल की पुर आशोबी, शोरिशों की कसरत और बग़ावतों की ज़ियादती महसूस कर रहे थे, लेकिन आख़िर में इक़्तेज़ाए माहौल से बज़ाहिर मजबूर होकर आप ने ख़िलाफ़ते ज़ाहिरी क़ुबूल कर ली, लेकिन अगर उस वक़्त आप क़ुबूल न करते तो पहले तो लोग क़त्ल पर आमादा थे और दूसरे दुनिया को यह कहना का मौक़ा मिल जाता कि हज़रत अली[अ०] अपने में ख़लीफ़ा होने की सलाहियत ही नहीं पाते थे वरना ख़िलाफ़त क़बूल न कर लेते।

मुख़ालिफ़ लोगों के प्रोपगण्डे

अमीरुलमोमिनीन[अ०] को ज़ाहिरी ख़िलाफ़त मिलते ही इराक़ और शाम की मुख़ालिफ़तों ने एक के बाद एक घेर लिया और हफ़्ते दो हफ़्ते के बाद ही से इराक़ की बग़ावतों के दरवाज़े खुल गए इमारते कूफ़ा और बसरा न मिलने की वजह से तलहा और ज़ुबैर मदीने से उठकर मक्के पहुँचे उनका मक्के पहुँचना था कि कूफ़ा, बसरा और यमन में साज़िशें शुरु हो गईं अब्दुल्लाह ने इब्ने आमिर, तलहा इब्ने अब्दुल्लाह, ज़ुबैर इब्ने अव्वाम, आएशा बिन्ते अबीबक्र, अब्दुल्लाह मख़ज़ूमी, सईद इब्नुल आस, मुग़ीरा इब्ने शोबा, मरवानुल हकम, यह सब के सब एक बार खुदमुख़्तार हो गए और इन लोगों ने तीस हज़ार का गिरोह एक माह के अन्दर तैयार कर लिया। अमीरुलमोमिनीन[अ०] ने यह ख़बर पाकर ख़ामोश रह जाना अपनी अक़्लमन्दी के ख़िलाफ़ समझा, आप भी एक जमाअत के साथ दिफ़ाअ़ (बचाव) पर तैयार हो गए। आपकी ग़रज़ इन ख़ाना जंगियों से यह न थी मुसलमान मारे जाएं बल्कि सिर्फ़ उनको समझाना मक़सद था। आपकी नियत यह कभी न थी कि आपस में एक दूसरे के गिरेबान पकड़े जाएं। यही वजह थी कि आपने पहले खुद ख़त लिख-लिख कर इनको समझाना और राह रास्त

(बक़िया .... पेज 11 पर)

नहीं कर सकते, अन्जान लोग उनके ना माँगने की वजह से उनको बेज़रूरत समझते हैं। तुम उनके चेहरे से पहचानते हो कि वह हाजतमन्द हैं (अगरचे) लोगों से चिमटकर सवाल नहीं करते।

सदक़ात इकटठा करने का तरीक़ा

हज़रत अली[अ०] ने अपने एक गश्ती हुक्म में सदक़ात इकटठा करने का तरीक़ा बयान फ़रमाया हैः-

"जाओ उस अकेले ख़ुदा का डर दिल में लिये जाओ जिसका कोई साझी नहीं है। (देखना) किसी मुसलमान को हरगिज़ न डराना और ऐसे वक़्त उसके पास से न गुज़रना जब वह पसन्द न करता हो। और अल्लाह का जो हक़ उसके माल में हो इससे ज़्यादा न लेना। जब तुम किसी क़बीले के पास जाओ तो उनके घरों से दूर तालाब के पास उतरो, फ़िर सुकून और वक़ार के साथ उनके पास जाओ और सामने खड़े होकर पहले सलाम करो और पूरे सलाम के आदाब बजा लाओ। फ़िर यह कहो कि ऐ ख़ुदा के बन्दों! मुझे ख़ुदा के वली और उसके ख़लीफ़ा ने तुम्हारे पास इसलिए भेजा है कि तुम्हारे मालों में जो कुछ हक़ ख़ुदा का है वह तुम से वसूल कर लूँ। बस अगर हक़ीक़त में तुम्हारे पास अल्लाह का कोई हक़ है तो उसको अल्लाह के वली के पास पहुँचा दो। इस पर अगर कोई यह कहे कि "नहीं" तो फ़िर उससे बहस न करो और अगर कहे कि "हाँ है" तो उसके साथ जाओ और बिना डराए धमकाए, ज़बरदस्ती और सख़्ती के बिना जो कुछ वह सोने और चाँदी में से दे ले लो। अगर उसके पास जानवर हों और ऊँटनियाँ हो तो उनके गले में बग़ैर उसकी इजाज़त के दाख़िल न हो क्योंकि ज़्यादा हिस्से का मालिक तो आख़िर वही है; और जब (मालिक की इजाज़त से) उसमें दाख़िल भी हो तो इस तरह नहीं जैसे क़ब्ज़ा जमाने वाले और ज़ालिम शख़्स दाख़िल होते हैं, न किसी जानवर को भड़काओ, न डराओ, ग़रज़ उनके साथ कोई ऐसी बात न करो जो मालिक को बुरी मालूम हो; और माल को दो हिस्सों में तक़सीम कर दो और उसको इख़्तियार दे दो (कि जो हिस्सा चाहे ले ले) और जब वह कोई हिस्सा पसन्द कर ले, तो उससे हिस्से के बारे में कुछ बहस न करो। बस बराबर ऐसा ही करते रहो यहाँ तक कि सिर्फ़ इतना माल बाक़ी रह जाए जिससे ख़ुदा का हक़ पूरा होता है। बस इस को ले लो। (बस अगर उसमें कोई ऐसा जानवर आ जाए जिसके देने) मालिक माफ़ी माँगे तो माफ़ कर दो और सारे माल को आपस में मिलाकर इस तरह नई तरह से तक़सीम करो, यहाँ तक कि तुम उसके माल में से अल्लाह का हक़ भी ले लो (और उसे शिकायत का मौक़ा भी न रहे)।

बक़िया............क्या ख़िलाफ़ते अलविया......... पर लाना ज़रूरी समझा जो फ़ायदेमंद साबित न हुआ फिर आपने भरोसेमंद लोगों को सिफ़ारिश के लिए भेजा फ़िर भी कुछ सुनवाइ न हुई इसके बाद बेवास्ता और ग़ैर सरकारी लोग जैसे, कै़नुक़ाअ़ वग़ैरा आपस में सुलह कराने में लगे मगर नाकाम रहे लेकिन फ़िर भी आपने शुरुआत न की और नौबत यह हो गई कि बसरा में फ़साद हो चुके थे हकीम और उसके बेटे और भाई के क़त्ले आम हो चुके, तमाम क़बील-ए-ख़ज़ाअ़ी तबाह व बर्बाद कर डाले गए, राजधानी और बसरा का बैतुलमाल लुट चुका, उस्मान इब्ने हनीफ़ अन्सारी मौजूदा आमिले बसरा की दुर्गत बन चुकी। उस वक़्त तक आप ख़ामोश रहे, बल्कि जंग के वक़्त भी जब मुस्लिम इब्ने अब्दुल्लाह, हदील इब्ने वरक़-ए-ख़ज़ाअ़ी और उनके भाइयों का ख़ून हो चुका, तो आपने देखा कि यह ख़ामोशी हमारे साथियों की ग़रीब (अज़ीज़) जातों के बर्बाद होने की वजह हो रही है तो अब आप भी बचाव के लिए उठ खड़े हुए, आपने कहीं से इसका मौक़ा न दिया कि लोग यह कह सकें कि अली[अ०] की ख़िलाफ़त के दौर में सैकड़ों मुसलमानों का ख़ून हो गया आपने जंग में मुसलमान देर इतनी कि फ़ौज वाले इतना बेक़रार थे कि जिसकी कोई इन्तेहा नहीं रह गई थी, यहाँ तक कि इन लोगों ने कह दिया कि अल्लाह की पनाह अली[अ०] मौत से डर कर जंग नहीं करते।

इसके बाद फ़िर जमल की मश्हूर लड़ाई हुई जिसके वाक़ेआ़त लिखकर मुझे तूल देना मक़सूद नहीं है, फिर शाम की बग़ावत की शुरुआत हुई और सिफ़्फ़ीन की लड़ाई हुई जिसमें भी हज़रत आगे नहीं बढ़े बल्कि नसीहत व हिदायत का कोई भी मौक़ा नहीं छोड़ा। ख़त पर ख़त लिखे, वफ़्द पर वफ़्द भेजे यहाँ कि आपके भेजे हुए लोग शाम की दरबार से निकाल दिये गए जब यह ख़राब हालात जमहूरियत के मज़बूत निज़ाम को अपनी भरपूर ताक़त से मिटाने के लिए इतने तैयार हो गए और समाजी ज़िन्दगी में हद का बिगाड़ पैदा हो गया, इक़्तेदार पसन्दी की पुरानी जेहालत वाली रस्म पलटने लगी, इस्लाम के क़ानून, इक़्तेदार पसन्दी में मिटने लगे, तो अब आप भी जंग पर तैयार हो गए लेकिन फ़िर भी आप ने बड़े सब्र से काम लिया यहाँ तक कि जंग के मैदान में भी पहल करना गवारा न किया तो लोग कानाफूसी करने लगे, तो आपने अपने एक ख़ुतबे में इरशाद फ़रमाया किः

"वह इस तरह बे तहाशा मेरी तरफ़ लपके जिस तरह पानी पीने के दिन वह ऊँट एक-दूसरे पर टूटते हैं कि जिन्हें उनके चलाने वालों ने पैरों के बन्धन खोल कर छोड़ दिया हो। यहाँ तक कि मुझे यह लगने लगा कि या तो मुझे मार डालेंगे। (ख़ुतबा न०-54)